शेखावाटी साहित्य संगम 08 | 21 हजार घुमंतू परिवारों को आवासीय पट्टे 09 | चाँदनी चौक के बलिदानी 10

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

पाथेय कण

आश्विन शु.14, वि.2081, युगाब्द 5126, 16 अक्टूबर, 2024

39 वर्षों से निरंतर

हिन्दू भूमि का कण-कण हो
अब शक्ति का अवतार उठे।
जल थल से अम्बर से फिर,
हिन्दू की जय-जयकार उठे,
जग जननी का जयकार उठे।।

(डॉ. मोहन भागवत)

नागपुर में आयोजित विजयादशमी उत्सव पर
शस्त्र पूजा करने के बाद उद्बोधन देते हुए सरसंघचालक जी

www.patheykan.com

patheykan@gmail.com @patheykanofficial @patheykanofficial @patheyofficial1 @patheykan

विचारोत्तेजक

16 सितम्बर के पाथेय कण में संपादकीय 'सचेत करता वैश्विक परिदृश्य' काफी विचारोत्तेजक लगा। 'पूर्वोत्तर भारत के शिवाजी लाचित बोरफूकन', 'माता सावित्री', 'मदरसे में चल रहा था जाली नोटों का छापाखाना' आदि लेखों ने आंखें खोल दीं।

-कवि, डॉ. एसके लोहानी
खालिस, जयपुर

महान योद्धा

16 सितम्बर के अंक में प्रथम पृष्ठ पर असम के महान योद्धा लाचित बोरफूकन का चित्र देखकर हृदय गदगद हो गया। क्या कारण था कि हम इतने वर्षों तक ऐसे महान योद्धा को उचित सम्मान नहीं दे पाए? समय आ गया है कि भारत भूमि के इस महान योद्धा को भारतीय जन मानस में पुनर्जीवित किया जाए।

-अशोक सिंह राजपुरोहित, *बीकानेर*

पूर्वांचल के शिवाजी

आमुख कथा में पूर्वोत्तर भारत के शिवा लाचित बोरफूकन के बारे में पढ़ा। ऐसा कुशल यौद्धा जिनके पराक्रम की वजह से मुगल पूर्वोत्तर भारत को अपने अधीन नहीं कर सके। दुश्मन द्वारा उनकी कोई भी कमजोरी को ना पकड़ पाना उनके नेतृत्व गुण की उत्कृष्टता को दर्शाता है। लापरवाही के कारण अपने संबंधी को भी सजा देना उनके अनुशासन का भाग था। ऐसे महान सपूत की यश गाथा शेष भारत के लिए अनभिज्ञ रही जो किसी आश्चर्य से कम नहीं है, वीर फूकन सही अर्थों में पूर्वोत्तर भारत के शिवाजी थे, जिनकी कार्यशैली वर्तमान सुरक्षा व्यवस्था में कारगर सिद्ध हो सकती है और नई पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी साबित होगी।

-बिजेन्द्र गुप्ता,
bijendra4223@gmail.com

नारी सुरक्षा और जिहाद

पुरातन काल से नारी को पूजनीय स्थान दिया गया मनुस्मृति में एक श्लोक भी है- '***यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।***' अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। जबकि आधुनिक समय में महिलाएं टीवी सीरियल और फिल्मों की देखा-देखी षड्यंत्रपूर्वक लव जिहाद का शिकार बनती जा रही है। महिलाओं को संघ की कुटुंब प्रबोधन जैसी गतिविधियों और राष्ट्र सेविका समिति जैसे संगठनों में सक्रिय भागीदारी बढ़ानी चाहिए ताकि जो स्थिति उत्पन्न हो रही है उससे जागृति हो सके और समय रहते बचा जा सके।

-ईश्वर धाकड़, *लक्ष्मीपुरा, चित्तौड़गढ़*

1 व 16 नवम्बर का संयुक्तांक : 'महिला सुरक्षा'

आगामी 1 व 16 नवम्बर के अंक को मिलाकर संयुक्तांक 16 नवम्बर को प्रकाशित होगा। अंक में महिला सुरक्षा से जुड़े विविध विषयों को संजोकर विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

वर्तमान में पाथेय कण 1 लाख 74 हजार प्रतियां प्रकाशित हो रही हैं। इसमें विज्ञापन देने के इच्छुक व्यक्ति / संस्था पाथेय कण के प्रबंध संपादक ओमप्रकाश जी से मो.नं. 9929722111 पर संपर्क कर सकते हैं।

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें (दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

- **अजमेर में देश का पहला डबल डेकर ई-क्रूज**
  https://patheykan.com/?p=29690
- **क्रांतिकारी दुर्गा भाभी** https://patheykan.com/?p=29666
- **नशे की सबसे बड़ी खेप** https://patheykan.com/?p=29669

पाथेय कण
आश्विन शु.14 से कार्तिक कृ.14 तक
विक्रम संवत 2081
युगाब्द 5126
16-31 अक्टूबर, 2024
वर्ष : 40 अंक : 14

सम्पादक : रामस्वरूप अग्रवाल
सह सम्पादक : मनोज गर्ग
प्रबंध सम्पादक : ओमप्रकाश
सह प्रबंध सम्पादक : श्याम सिंह
अक्षर संयोजन : कौशल रावत

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राजस्थान)
E-mail : patheykan@gmail.com

पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक: माणकचन्द

सहयोग राशि
एक वर्ष 150/-
पन्द्रह वर्ष 1500/-

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर प्रात: 10 से सायं 5 बजे तक संपर्क करें- 79765 82011 इसके अतिरिक्त समय में वाट्सएप व मैसेज करें अथवा ईमेल पर जानकारी दें। (अति आवश्यक होने पर मो.न. 9166983789 पर मोहित जी से संपर्क कर सकते हैं)

कश्मीर घाटी के मतदाता में यह विभ्रम क्यों ?

जम्मू-कश्मीर में मतदान के दिन कई पत्रकारों ने विभिन्न क्षेत्रों में जाकर मतदाता का मन टटोलने का प्रयास किया- उनके वीडियो यू-ट्यूब पर उपलब्ध हैं। कश्मीर घाटी में मुस्लिम मतदाताओं का सामान्यतया कहना था कि वे सत्ता पलटने के लिए वोट कर रहे हैं। वे मोदी-भाजपा को हटाना चाहते हैं। ज्यादातर मतदाताओं का कहना था कि पिछले वर्षों में (धारा 370 हटने के बाद) हालात खराब हो गए हैं। परंतु जब पत्रकार ने पूछा कि क्या यह सही नहीं है कि पहले पत्थरबाजी होती थी, अब बंद है, पहले स्कूल अधिकतम समय बंद रहते थे, अब वहां नियमित पढ़ाई हो रही है, सिनेमा हॉल-बाजार खुल गए हैं, पर्यटकों की संख्या बढ़ी है, व्यवसाय को बढ़ावा मिला है और तुलनात्मक रूप से अब शांति है? मतदाताओं ने इसे स्वीकार किया। वे इन तथ्यों को मानते हैं, फिर अचानक क्या हो जाता है कि,उनमें से अधिकांश ने कहा-महंगाई बढ़ गई है, बेरोजगारी बढ़ गई है, मोदी ने आग लगा दी है, लोगों को मार रहे हैं। पूछने पर कि कहां आग लगी? वे चुप हो जाते हैं। उन्हें कोई जवाब नहीं सूझता?

क्या मुस्लिम मतदाताओं को कहीं से निर्देश मिलता है कि उन्हें क्या बोलना है, किस दल को 'मत' देना है? अनुच्छेद 370 हटने के बाद कश्मीर घाटी में हुए सकारात्मक बदलाव को स्वीकार करते-करते अचानक वे मोदी और भाजपा के विरुद्ध बोलना शुरू कर देते हैं? यह विरोधाभास क्यों? यह विभ्रम की स्थिति क्यों?

क्या यह निष्कर्ष निकाला जाय कि भाजपा मुस्लिम समुदाय सहित देश के लोगों का कितना ही भला क्यों न कर दे, कितना ही विकास कार्य क्यों न कर दे, मुस्लिम मतदाता भाजपा के विरोध में ही रहेंगे? क्या कोई संस्था, संगठन अथवा समूह हैं जो उन्हें निर्देश देते हैं?

जम्मू-कश्मीर के मुस्लिमों का यह व्यवहार पिछले समय बिहार-यूपी के चुनावों में भी दिखाई दिया। वहां भी इस समुदाय के लोगों ने लगभग एक सा ही जवाब दिया था कि भाजपा ने महंगाई व बेरोजगारी बढ़ा दी है, इसलिए भाजपा को हराना है। क्या यह उन्हें समझाया जाता है कि पूछने पर क्या कहना है?

पहले मुस्लिम मतदाताओं के मत भाजपा विरोधी दलों में बंट जाते थे। परंतु, अब तो रणनीतिक रूप से वे भाजपा विरोधी उस दल को ही वोट देते दिखाई दिए जो भाजपा को हराने में सक्षम लगे। 2014 के विधान सभा चुनावों में जम्मू-कश्मीर में महबूबा मुफ्ती की पीडीपी को 28 तो फारूख अब्दुल्ला की एनसी को 15 सीटें मिलीं थीं। परंतु इस बार एनसी को 42 मिली और पीडीपी को मात्र 3 सीटें मिली।

स्पष्ट है कि मुस्लिम मतदाता के मतदान का आधार या कसौटी विकास कार्य तो नहीं ही है। तो वे किस के लिए मतदान करते हैं? गाहे-बगाहे यानी कभी कभार किसी मुस्लिम नेता या मौलाना-मौलवी के मुँह से इस संदर्भ में 'गजवा-ए-हिंद' जैसे शब्द निकल ही जाते हैं। 'गजवा-ए-हिंद' अर्थात् जंग द्वारा देश का इस्लामीकरण करना। चुनाव भी एक प्रकार से जंग (युद्ध-संघर्ष) ही है।

शायद एक और कारण भी हो!

भाजपा 'देश में एक जैसा कानून लागू करने के संवैधानिक प्रावधान' को लागू करना चाहती है। वर्तमान युग में सारी व्यवस्थाएं एक तर्क संगत ढंग से चले, न्याय संगत हों, इसके लिए वक्फ अधिनियम को युक्तिसंगत बनाना चाहती है। देश के हित में है कि घुसपैठियों को बाहर निकाला जाए और पड़ौसी देश में सताए गए हिंदुओं को जो शरणार्थी के रूप में भारत आए हैं, उन्हें शरण दी जाए। इस देश के आराध्य प्रभु राम के जन्मस्थान पर बने अपमान के प्रतीक बाबरी ढांचे के स्थान पर मंदिर बनाने का कार्य भाजपा ने प्रशस्त किया। इन संविधान सम्मत और देशहित के कार्यों को मुस्लिम नेतृत्व और गैर भाजपा दलों ने अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए मुस्लिम-विरोधी बताकर एक हव्वा खड़ा कर दिया है।

इस स्थिति में से देश कैसे बाहर निकले यह बड़ा प्रश्न है। हिंदू समाज को भी इस पर चिंतन करने की आवश्यकता है।

– रामस्वरूप

सरसंघचालक डॉ.मोहन भागवत जी का विजयादशमी उद्बोधन

■ भारत एक राष्ट्र के तौर पर विश्व में सशक्त और प्रतिष्ठित हुआ ■ समाज का असंगठित व दुर्बल रहना अत्याचारों को निमंत्रण देना है ■ सांस्कृतिक एकात्मता की आधारशिला पर राष्ट्र जीवन खड़ा है ■ 'मातृवत् परदारेषु' हमारी सांस्कृतिक देन है ■ समाज में सर्वत्र समरसता का वातावरण बनाना होगा ■ संस्कार प्रदान की व्यवस्था पुनर्स्थापित करनी होगी ■ कर्तव्यों व कानूनों का निर्वहन सबको करना चाहिए ■ राष्ट्रीय चारित्र्य व्यक्ति के सुखी जीवन का एकमात्र उपाय ■ देश को एकात्म, सुख शांतिमय, समृद्ध व बल सम्पन्न बनाना हम सबका कर्तव्य

राष्ट्र एवं समाज को नव दिशा देने वाला विजयादशमी उद्बोधन गत 12 अक्टूबर को नागपुर में संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन राव भागवत जी ने दिया। संघ के 100वें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विभिन्न सामयिक विषयों पर उन्होंने अपने विचार सभी के समक्ष रखे। प्रस्तुत है उद्बोधन का सारांश –

पुण्य स्मरण : महारानी दुर्गावती और पुण्यश्लोक अहिल्या देवी होलकर भारत की मातृशक्ति के कर्तृत्व व नेतृत्व की दैदीप्यमान परंपरा के उज्ज्वल प्रतीक हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती ने सामाजिक रीति-रिवाजों में आयी विकृतियों को दूर कर, समाज को शाश्वत मूल्यों पर खड़ा करने का प्रचंड उद्यम किया। आगामी 15 नवम्बर से भगवान बिरसा मुंडा की जन्मजयंती का 150वां वर्ष प्रारंभ होगा। यह सार्धशती हमें, जनजातीय बंधुओं की गुलामी तथा शोषण से, स्वदेश पर विदेशी वर्चस्व से मुक्ति, अस्तित्व व अस्मिता की रक्षा एवं स्वधर्म रक्षा का स्मरण करायेगी।

व्यक्तिगत व राष्ट्रीय चारित्र्य : प्रामाणिकता से, नि:स्वार्थ भावना से देश, धर्म, संस्कृति व समाज के हित में जीवन लगा देने वाले ऐसी विभूतियों का हम इसलिए स्मरण करते हैं क्योंकि उन्होंने हम सब के हित में कार्य तो किया है ही, अपितु अपने स्वयं के जीवन से हमारे लिए अनुकरणीय जीवन व्यवहार का उत्तम उदाहरण उपस्थित किया है। परिस्थिति अनुकूल हो या प्रतिकूल, व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय चारित्र्य की ऐसी दृढ़ता ही मांगल्य व सज्जनता की विजय के लिए शक्ति का आधार बनती है।

देश विरोधी कुप्रयास : विश्व में भारत के प्रमुखत्व पाने से जिनके निहित स्वार्थ मार खाते हैं, ऐसी शक्तियां भारत को एक मर्यादा के अंदर ही बढ़ने देना चाहेंगी। भारत की छवि को मलिन करने का प्रयास, असत्य अथवा अर्धसत्य के आधार पर चलता हुआ स्पष्ट दिखाई देता है। अभी-अभी बांग्लादेश में जो हिंसक घटनाक्रम हुआ, हिंदू समाज पर अकारण नृशंस अत्याचारों की परंपरा को फिर से दोहराया गया। उन अत्याचारों के विरोध में वहां का हिंदू समाज इस बार संगठित होकर स्वयं के बचाव में घर के बाहर आया इसलिए थोड़ा बचाव हुआ। परन्तु यह अत्याचारी कट्टरपंथी स्वभाव जब तक वहां विद्यमान है तब तक वहां के हिंदुओं के सिर पर खतरे की तलवार लटकी रहेगी।

असंगठित रहना व दुर्बल रहना यह दुष्टों के अत्याचारों को निमंत्रण देना है, यह पाठ विश्व भर के हिंदू समाज को ग्रहण करना चाहिए। समाज के लिए सर्वाधिक चिन्ता की बात यह है कि समाज में विद्यमान भद्रता व संस्कार को नष्ट-भ्रष्ट करने , विविधता को अलगाव में बदलने, समस्याओं से पीड़ित समूहों में व्यवस्था के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न करने तथा असन्तोष को अराजकता में रूपांतरित करने के प्रयास बढ़े हैं।

'डीप स्टेट', 'वोकिज्म', 'कल्चरल मार्क्सिस्ट', ऐसे शब्द आजकल चर्चा में है। वास्तव में सभी सांस्कृतिक परम्पराओं के ये घोषित शत्रु हैं। सांस्कृतिक मूल्यों, परम्पराओं तथा जहां-जहां जो भी भद्र, मंगल माना जाता है उसका समूल उच्छेद इस समूह के कार्यप्रणाली का ही अंग है।

असंतोष को हवा देकर उस घटक को शेष समाज से अलग कर व्यवस्था के विरुद्ध उग्र बनाया जाता है। समाज में टकराव की सम्भावनाओं को (fault lines) ढूंढ कर प्रत्यक्ष टकराव खड़े किए जाते हैं। व्यवस्था, कानून, शासन, प्रशासन आदि के प्रति अश्रद्धा व द्वेष को उग्र बना कर अराजकता व भय का वातावरण खड़ा किया जाता है।

संस्कार क्षरण के दुष्परिणाम : महिलाओं की ओर देखने की हमारी दृष्टि –'मातृवत् परदारेषु' हमारी सांस्कृतिक देन है। हमें परिवार, समाज तथा संवाद माध्यमों के द्वारा इन सांस्कृतिक मूल्यों के प्रबोधन की व्यवस्था को फिर से जागृत करना होगा।

शक्ति का महत्व : जब समाज स्वयं जगता है, अपने भाग्य को अपने पुरुषार्थ से लिखता है तब महापुरुष, संगठन, संस्थायें, प्रशासन, शासन आदि सब सहायक होते हैं। इसीलिए शताब्दी वर्ष के पूरे होने के पश्चात् समाज में कुछ विषय लेकर सभी सज्जनों को सक्रिय करने का विचार संघ के स्वयंसेवक कर रहे हैं।

समरसता व सद्भावना : समाज की स्वस्थ व सबल स्थिति की पहली शर्त है सामाजिक समरसता तथा समाज के विभिन्न वर्गों में परस्पर सद्भाव। यह पहल हम सभी को व्यक्तिगत तथा पारिवारिक स्तर से करनी होगी।

सार्वजनिक उपयोग व श्रद्धा के स्थल यथा मंदिर, पानी, श्मशान आदि में समाज के सभी वर्गों को सहभागी होने का वातावरण बनाना चाहिए।

पर्यावरण: उपभोगवादी तथा जड़वादी अधूरे वैचारिक आधार पर चली मानव की तथाकथित विकास यात्रा मानवों सहित सम्पूर्ण सृष्टि की विनाश यात्रा बन गयी है। इस वैचारिक आधार पर धारणक्षम, समग्र व एकात्म विकास देने वाला हमारा पथ हम स्वयं निर्माण करें। सम्पूर्ण देश में इसकी समान वैचारिक भूमिका बने व सामान्य लोग अपने घर से तीन छोटी-छोटी सरल बातों का आचरण करते हुए इसको प्रारम्भ कर सकते हैं। पहली जल का न्यूनतम आवश्यक उपयोग तथा वर्षा जल का संधारण करें। दूसरी प्लास्टिक वस्तुओं का उपयोग नहीं करना। तीसरी अपने घर से लेकर बाहर भी हरियाली बढ़े, इसकी चिंता करना।

संस्कार जागरण : नई शिक्षा नीति में मूल्य शिक्षा की व्यवस्था व तदनुरूप पाठ्यक्रम का प्रयास चला है परन्तु प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक शिक्षकों के उदाहरण छात्रों के सामने उपस्थित हुए बिना यह शिक्षा नीति प्रभावी नहीं होगी। इसलिए शिक्षकों के प्रशिक्षण की नई व्यवस्था निर्माण करनी पड़ेगी। दूसरा समाज के जो प्रमुख लोग हैं, जिनकी लोकप्रियता के कारण अनेक लोग उनका अनुकरण करते हैं, उनके आचरण में ये सारी बातें दिखनी चाहिए। इन बातों का मंडन भी उन प्रमुख लोगों को करना चाहिए और उनके प्रभाव से समाज में चलने वाले विभिन्न प्रबोधन कार्यों से यह मूल्य निष्ठा प्रबोधन किया जाना चाहिए।

नागरिक अनुशासन : संस्कारों की अभिव्यक्ति का दूसरा पहलू है हमारा सामाजिक व्यवहार। समाज में हम एक साथ रहते हैं। साथ में सुखपूर्वक रह सके इसलिए कुछ नियम बने होते हैं। देश काल परिस्थिति अनुसार उनमें परिवर्तन भी होते हैं। कानून व संविधान भी ऐसा ही, एक सामाजिक अनुशासन हैं। संविधान प्रदत्त कर्तव्यों का और कानून का योग्य निर्वहन सभी को करना होता है। छोटी-बड़ी सभी बातों में इस नियम व्यवस्था का पालन हमें करना चाहिए।

स्व गौरव : इन सारी बातों का आचरण सतत होता रहे इसलिए जो प्रेरणा आवश्यक है वह 'स्व गौरव' की प्रेरणा है। हम कौन हैं ? हमारी परम्परा और हमारा गंतव्य क्या है? इन सब बातों का ज्ञान होना, सबके लिए आवश्यक है। उस पहचान के उज्ज्वल गुणों को धारण करके, उसका गौरव मन और बुद्धि में स्थापित होता है, तो उसके आधार पर स्वाभिमान प्राप्त होता है । स्व गौरव की प्रेरणा का बल ही जगत में हमारी उन्नति व स्वावलंबन का कारण बनने वाला व्यवहार उत्पन्न करता है। राष्ट्रीय नीति में उसकी अभिव्यक्ति बहुत बड़ी मात्रा में, समाज में दैनंदिन जीवन में व्यक्तियों द्वारा होने वाले स्वदेशी व्यवहार पर निर्भर करती है। इसी को स्वदेशी का आचरण

कार्यक्रम में सरसंघचालक जी के साथ बैठे मुख्य अतिथि पद्मभूषण डॉ.के राधाकृष्णन (पूर्व अध्यक्ष, इसरो) व अन्य अधिकारीगण

कहते हैं । घर के अन्दर भाषा, भूषा, भजन, भवन, भ्रमण और भोजन ये अपना हो, अपनी परम्परा का हो यह ध्यान रखना, यह सारांश में स्वदेशी व्यवहार है।

मन-वचन-कर्म का विवेक : राष्ट्रीय चारित्र्य के व्यवहार का एक और महत्वपूर्ण पहलू है, किसी भी प्रकार की अतिवादिता तथा अवैध पद्धति से अपने आप को दूर रखना । अपना देश विविधताओं से भरा हुआ देश है । उनको हम भेद नहीं मानते, न ही मानना चाहिए। हमारी विविधताएं सृष्टि की स्वाभाविक विशिष्टताएं हैं। अपनी-अपनी विशिष्टता का गौरव तथा उनके प्रति अपनी अपनी संवेदनशीलताएं भी स्वाभाविक हैं। सहिष्णुता व सद्भावना भारत की परंपरा है। असहिष्णुता व दुर्भावना भारत विरोधी व मानव विरोधी दुर्गुण हैं। इसलिए क्षोभ कितना भी हो, ऐसे असंयम से बचना चाहिए तथा अपने लोगों को बचाना चाहिए। अपने मन, वाणी अथवा कृति से किसी की श्रद्धा का, श्रद्धास्पद स्थान, महापुरुष, ग्रंथ, अवतार, संत आदि का अपमान न हों, इस का ध्यान स्वयं के व्यवहार में रखना चाहिए। यही मनुष्यों के सुखी अस्तित्व तथा सहजीवन का एकमात्र उपाय है।

संगठित शक्ति, शुद्ध शील ही शान्ति व उन्नति का आधार : भारत वर्ष बड़ा (शक्तिसंपन्न) होने से दुनिया में अंतरराष्ट्रीय व्यवहार में सद्भावना व संतुलन उत्पन्न होकर शान्ति और बंधुता की ओर विश्व बढ़ेगा, यह विश्व में सब राष्ट्र जानते हैं। इसलिए उपरोक्त सद्भाव व संयमपूर्ण वातावरण की स्थापना के लिए सज्जनों को शक्तिसंपन्न होना ही पड़ेगा। शक्ति जब शीलसंपन्न होकर आती है तब वह शान्ति का आधार बनाती है। दुर्जन स्वार्थ के लिए एकत्र रहते हैं और सजग रहते हैं। उनका नियंत्रण सशक्त ही कर सकते है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिंदू समाज के इसी शीलसंपन्न शक्ति साधना का नाम है।

नौ अहोरात्र जागरण करते हुए सभी देवताओं ने अपनी-अपनी शक्तियों को एक में संगठित किया तब उस शीलसंपन्न संहत (संगठित) शक्ति से चिन्मयी जगदम्बा जागी, दुष्टों का निर्दालन हुआ, सज्जनों का परित्राण हुआ, विश्व का कल्याण हुआ। इसी विश्व मंगल साधना में मौन पुजारी के नाते संघ लगा है। उस साधना में आप सभी सादर निमंत्रित हैं।

।। भारत माता की जय।।

सेवा व अध्यात्म का अनूठा संगम
चतुर्थ हिंदू आध्यात्मिक एवं सेवा मेला सम्पन्न

समाज के विभिन्न आध्यात्मिक और सामाजिक संगठनों, मठ, मंदिरों व संस्थाओं द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों को एक छत के नीचे लाने का प्रयास हिंदू आध्यात्मिक एवं सेवा (एचएसएस) फाउण्डेशन द्वारा देश में वर्ष 2009 से किया जा रहा है।

सेवा कार्यों में जन साधारण कैसे सहभागी बन सकता है, ऐसे उपलब्ध सभी विकल्पों से परिचय कराने हेतु हिंदू आध्यात्मिक सेवा मेले का आयोजन किया जाता है।

बीती 26 से 30 सितम्बर के मध्य **जयपुर के आदर्श नगर** स्थित दशहरा मैदान में चतुर्थ सेवा मेला (राजस्थान चैप्टर) सम्पन्न हुआ। राजस्थान में इस मेले की शुरुआत वर्ष 2015 में हुई थी। उसके बाद 2016, 2017 और इस बार यह चौथा आयोजन था। बीच के कालखण्ड में कोरोना महामारी के कारण यह आयोजन नहीं हो सका था। मेले का उद्घाटन उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनकड़, जगतगुरू निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्रीश्यामशरण देवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज, पूज्य साध्वी ऋतम्भरा जी, स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज व डॉ. चिन्मय पंड्या जैसे गणमान्यजन की उपस्थिति में हुआ।

उद्घाटन से पूर्व 24 अगस्त को जयपुर के अल्बर्ट हॉल से साइकिल रैली निकाल कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश प्रदेश के 10 हजार बच्चों ने दिया। इसी कड़ी में संत- समागम प्रबुद्धजन संगोष्ठी (1 सितम्बर) का भी आयोजन किया गया जिसमें प्रदेश के महामंडलेश्वर, विभिन्न मठों के मठाधीश, विभिन्न व्यापार मण्डलों के अध्यक्ष और सामाजिक संगठनों के प्रबुद्धजन ने 'हिंदुत्व' पर अपने विचार साझा किए।

4 हजार कन्याओं का एक साथ वंदन

समाज में महिलाओं व बालिकाओं के प्रति सम्मान की भावना को बढ़ावा देने व भावी पीढ़ी में संस्कारों के बीजारोपण की दृष्टि से कन्या सुवासिनी वंदन कार्यक्रम में 4 हजार से अधिक कन्याओं का वंदन स्कूलों व स्थानीय बस्तियों से आये बच्चों द्वारा किया गया। कार्यक्रम के माध्यम से कन्याओं की सुरक्षा और उनके अधिकारों को सुनिश्चित करने का संदेश दिया गया था।

प्रतिदिन शाम को गंगा आरती

मां गंगा-गायत्री की प्रतिकृति के समक्ष प्रतिदिन सायंकाल हजारों दर्शकों द्वारा गंगा आरती के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण, धरती माता, नदियों व प्रकृति का आभार व्यक्त किया गया। आरती के दौरान मातृशक्ति बड़ी संख्या में एकत्र नजर आईं।

अहिल्याबाई नाटक का जीवंत मंचन

लोककल्याणकारी, समाज सेवी, धर्मनिष्ठ, न्यायप्रिय व आदर्श शासिका अहिल्याबाई होल्कर, जिनका जीवन संघर्ष व समर्पण की पराकाष्ठा थी, ऐसे प्रेरणादायी जीवन को इंदौर से आये लगभग 100 कलाकारों द्वारा भव्य सेट पर मंचित कर उनके व्यक्तित्व व कृतित्व से आमजन को परिचित कराया गया।

आचार्य वंदन

जयपुर शहर सरकारी/प्राइवेट स्कूलों से आये छात्र-छात्राओं द्वारा 4 हजार से अधिक शिक्षकों का सम्मान/पूजन कर जीवन को दिशा देने वाले गुरू के प्रति आभार प्रकट किया गया।

प्रकृति वंदन

2 हजार से अधिक विद्यार्थियों व आम नागरिकों द्वारा गौ, वृक्ष व तुलसी का वंदन कर प्रकृति का आभार व उसकी महत्ता को प्रकट किया गया।

मातृ-पितृ व अतिथि वंदन

पारिवारिक व मानवीय मूल्यों की अभिवृद्धि के उद्देश्य से यह कार्यक्रम माता-पिता, अपनों से बड़े तथा अतिथि सम्मान परम्परा की निरंतरता को दर्शाने हेतु आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में एक हजार परिवारों की सहभागिता देखी गई।

समरस भारत संगम

समाज में समरसता का वातावरण बने। इसी प्रयास में लगे साधु-संतों, सेवानिवृत्त प्रशासनिक अधिकारियों व जाति-बिरादरियों के प्रमुख बड़ी संख्या में इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

परमवीर वंदन

5 हजार से अधिक युवाओं द्वारा बलिदानी परमवीर चक्र विजेताओं का वंदन कर राष्ट्र भक्ति भाव का जागरण किया गया। इस दौरान संघ के सरकार्यवाह रहे श्री भैया जी जोशी, परमवीर चक्र विजेता आनरेरी कैप्टन योगेन्द्र यादव व जीवन प्रबंधन गुरु पंडित विजय शंकर मेहता, एचएसएस फाउण्डेशन के राष्ट्रीय संयोजक श्री गुणवंत सिंह कोठारी व सचिव सोमकांत शर्मा भी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर भैया जी जोशी ने कहा कि कार्यक्रम की सफलता तभी है जब हम अपने और अपने परिवार के अंदर देशभक्ति की भावना जगा पाएं। हम पैसा तो बहुत कमा लेते हैं, नाम भी बहुत कमा लेते हैं, परंतु राष्ट्र के प्रति जो हमारे कर्तव्य हैं, उन्हें हम नहीं निभाते। आज हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने बच्चों में बचपन से ही देशभक्ति भाव का जागरण करें।

हिंदू आध्यात्मिक कॉन्क्लेव

हिंदू कॉन्क्लेव में चार विषयों- भारतीय दर्शन एवं राष्ट्रीय एकता, कर्तव्य परायणता एवं भारतीय हिंदुत्व, व्यापक दृष्टिकोण तथा Hinduism and sanatana is only path of righteousness विषयों पर मंथन हुआ।

प्रसिद्ध डाटा साइंटिस्ट एस नरेन्द्रन ने युवाओं से कहा कि भारतीय कैसे बनना है, यह सीख लिया तो आने वाले समय में भारत विश्व गुरू बनेगा। दुनिया की कोई शक्ति इसे रोक नहीं सकती। उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के महत्व को समझाते हुए कहा कि 11 वर्षों के बाद विश्व के 67 प्रतिशत एआई इंजीनियर भारतीय होंगे। 2035 में दुनिया की कुल जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) में भारत की हिस्सेदारी 11 ट्रिलियन डॉलर होगी।

श्री नरेन्द्रन ने कहा 1100 वर्ष पहले विश्व में 55 प्रतिशत सनातनी थे तथा 62 प्रतिशत लोगों की मातृभाषा संस्कृत थी। ऐसे में एआई तकनीक से भारत वापस उसी स्टेज पर पहुँचेगा। वरिष्ठ पत्रकार श्री गोपाल शर्मा ने 'हिन्दुत्व एक व्यापक दृष्टिकोण' विषय पर जानकारी साझा की।

देशभर की 117 संस्थाओं की सहभागिता

सेवा मेले में देश के 8 राज्यों की 117 सेवा भावी संस्थाओं ने अपने सेवाकार्यों को पत्रकों / फोल्डरों / डिस्प्ले और बैनर के माध्यम से प्रदर्शित किया। पाँच दिवसीय मेले को 4 लाख लोगों ने प्रत्यक्ष आकर देखा, वहीं 30 लाख से अधिक लोगों ने ऑनलाइन (सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म) देखा।

मेले के दौरान हैरिटेज गांव, दादी-नानी का घर, बोधि वृक्ष व गंगा मैया की झांकी और विज्ञान के आविष्कारों व भारत को जानें जैसी प्रदर्शनियों ने मेले की भव्यता में चार चांद लगाए। ■ (मनोज गर्ग)

आद्याशक्ति का अवतार महादेवी सती

■ इंदुशेखर 'तत्पुरुष'

महादेवी सती का जन्म दक्ष प्रजापति की कन्या के रूप में हुआ। आद्याशक्ति का अवतार होने के कारण सती ने बचपन से ही शिव को पति के रूप में प्राप्त करने के लिए कठोर तप प्रारंभ कर दिया। ब्रह्माजी की प्रेरणा से दक्ष ने सती का विवाह शिव के साथ कर दिया। सती शिव की अर्धांगिनी होकर कैलाश पर्वत पर रहने लगी।

एक बार दक्ष प्रजापति ने अपनी राजधानी कनखल में महायज्ञ का आयोजन किया और उसमें सभी देवी-देवताओं को आमंत्रित किया। किन्तु वैर भाव के कारण न शंकरजी को बुलाया न अपनी पुत्री सती को। कैलाश पर्वत के ऊपर से जाते हुए विमानों को देखकर सती को कौतुहल हुआ। पिता के घर यज्ञ होने का पता चलने पर उन्होंने शिव से वहां जाने का आग्रह किया। शिव ने आमंत्रित न होने के कारण वहां जाना उचित नहीं बताया किंतु जब सती नहीं मानी तो शंकर ने उनके साथ अपने गण भी भेज दिए।

इधर अहंकार में चूर प्रजापति दक्ष ने सभी देवों को तो यज्ञभाग अर्पित किया किंतु शिव का भाग नहीं निकाला। उसने अपनी पुत्री सती को भी कोई मान नहीं दिया। शिव का तिरस्कार देख सती क्रोध और ग्लानि से भर गई। यह आघात उन्हें असह्य हो गया। उन्होंने यज्ञ कुण्ड में कूद कर अपने प्राण दे दिए। कुपित हुए शिव के गण वीरभद्र ने दक्ष के यज्ञ को ध्वस्त कर उसका सिर काट डाला। सर्वत्र हाहाकार मच गया।

ज्योंही शिव को यह समाचार मिला तो वे दौड़ पड़े। सती के शव को देखकर बहुत उद्विग्न हुए। वे सती की देह को कंधे पर रख, उन्मत्त होकर ताण्डव करने लगे। यह दृश्य देख देव-दानव सहित सम्पूर्ण सृष्टि घबरा उठी। आखिर शिव के मोह को दूर करने के लिए भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से सती के शव को खंड-खंड कर शिव से पृथक किया। तब जाकर शिव का कोप शान्त हुआ। देवी सती के ये इक्यावन अंश धरती पर जहां-जहां गिरे वे स्थल ही शक्तिपीठ बन गए। आज भी ये स्थान जगज्जननी सती की पूजा-उपासना के प्रमुख केंद्र हैं।

शिव के प्रति अखण्ड प्रेम के कारण सती का अगला जन्म पार्वती के रूप में हुआ। इस जन्म में भी उन्होंने कठोर तपस्या करके शिव को पुनः अपने पति के रूप में पा लिया।

-लेखक वरिष्ठ साहित्यकार हैं

अच्छा साहित्य पढ़ने की ललक जगाता, समसामयिक विषयों पर चिंतन को प्रेरित करता

शेखावाटी साहित्य संगम

28 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक **सीकर** में आयोजित किया गया शेखावाटी साहित्य संगम। बड़ी बात है कि लगातार 5वें वर्ष में प्रवेश करता यह आंचलिक साहित्य और विचार विमर्श का कुम्भ साहित्य प्रेमियों के साथ ही सामान्य जन में न केवल अच्छे साहित्य को पढ़ने के लिए प्रेरणा दे रहा है वरन् वर्तमान के महत्वपूर्ण विषयों पर विशेषज्ञों के साथ परिचर्चा के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना के जागरण का माध्यम भी बन रहा है।

साहित्य अनुष्ठान में जहां भविष्य का भारत, विश्व में भारत, स्वर्णिम भारत के दिशासूत्र, सामाजिक विभाजन, आधी आबादी जैसे विषयों पर चर्चा हुई वहीं नशा, मतांतरण, आहार, खाद्य पदार्थ, सिनेमा व समाज, सड़क सुरक्षा जैसे विषयों पर 16 वार्ताकारों ने संवाद किया। साहित्य संगम में अभिज्ञान शाकुंतलम् एवं हाड़ी रानी का बलिदान जैसे नाटकों का मंचन हुआ वहीं कवि सम्मेलन भी आयोजित किया गया जिसमें हास्य व वीर रस सहित व्यंग्य बाणों से श्रोता सराबोर होते रहे।

8 प्रतियोगिताएं भी हुई जिनमें 81 संस्थाओं के 634 प्रतिभागी शामिल थे, 32 निर्णायक उपस्थित रहे।

पुस्तक मेला : सम्पूर्ण आयोजन के दौरान देश के 22 प्रकाशकों ने अपनी लगभग 25 हजार पुस्तकों की प्रदर्शनी पाठकों के लिए लगाई। बताया गया है कि 5 लाख रुपयों के साहित्य का विक्रय हुआ।

उद्घाटन सत्र : 28 सितम्बर को हरियाणा के सूचना आयुक्त श्री प्रदीप सिंह शेखावत तथा संघ के राजस्थान क्षेत्र प्रचार प्रमुख डॉ.महावीर प्रसाद कुमावत ने उद्घाटन के साथ ही भविष्य के भारत पर अपने विचार रखे।

समारोप सत्र : इस सत्र में श्री हनुमत निवास अयोध्या के प्रमुख आचार्य मिथिलेश नंदिनी शरण जी महाराज ने विश्व हित में सनातन एवं वैश्विक स्वीकार्यता विषय पर अपने विचार रखे।

स्वर्णिम भारत के दिशासूत्र : संघ के अ.भा.प्रचार प्रमुख श्री सुनील आंबेकर ने इस विषय को स्पष्ट करते हुए श्रोताओं की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। आंबेकर जी इसी नाम से प्रकाशित पुस्तक के लेखक भी हैं।

विशेषज्ञ : साहित्य संगम में सहभागी रहे विषय विशेषज्ञों में डॉ.संदीप शर्मा, डॉ.शुचि चौहान, डॉ. सुनिधि मिश्रा, डॉ. पुरुषोत्तम, लेखक प्रखर श्रीवास्तव, रिपब्लिक टीवी के अमरदीप शर्मा, मूमल राजवी, संगीता प्रणवेन्द्र, अंशुल सक्सेना, डॉ.राकेश डामोर,दूरदर्शन के मुरारी गुप्ता, नेहा खुल्लर, डिंपल, शीतल आदि शामिल हैं।

कहना होगा कि आंचलिक स्तर पर आयोजित होने वाला यह 'शेखावाटी साहित्य संगम, धीरे-धीरे अपनी विशिष्ट पहचान बनाता जा रहा है। पांच दिनों में आठ हजार से अधिक लोगों की उपस्थिति सम्पूर्ण आयोजन को महत्वपूर्ण बनाती है। ■

राजस्थान सरकार का प्रशंसनीय कार्य

बेघर घुमंतू समुदाय के 21 हजार परिवारों को दिए आवासीय भूमि के पट्टे

संघ प्रेरित घुमंतू जाति उत्थान न्यास का प्रयास

गाड़िया लुहार, बंजारा, सांसी, कंजर जैसे अपने देश के घुमंतू समुदाय के लिए घर, रोजगार व जीवन की अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु राजस्थान सरकार तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रेरित 'घुमंतू जाति उत्थान न्यास' अनथक प्रयास कर रहा है।

राजस्थान की भाजपा सरकार ने बेघर घुमंतू परिवारों की व्यथा को दूर करने के लिए ठोस कदम उठाते हुए पिछले दिनों ऐसे 21 हजार बेघर परिवार को घर बनाने के लिए जमीन के पट्टे वितरित किए हैं। गत 2 अक्टूबर , गांधी जयंती के अवसर पर जयपुर में हुए एक कार्यक्रम में राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा एवं पंचायती राज तथा ग्रामीण विकास व शिक्षा मंत्री श्री मदनलाल दिलावर ने आवासीय पट्टे वितरित किए। इस अवसर पर राज्य मंत्री ओटाराम देवासी एवं सांसद मंजू शर्मा भी उपस्थित रहीं। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल ने आश्वस्त किया कि भविष्य में सरकार घुमंतू परिवारों को प्रधानमंत्री आवास योजना में पक्के मकान दिए जाने को भी सुनिश्चित करेगी। मंत्री श्री मदन दिलावर ने कहा कि यह कार्य बहुत पहले हो जाना चाहिए था। सरकार सभी घुमंतू जाति के लोगों को, जो पात्र हैं, नि:शुल्क प्लॉट देगी।

उल्लेखनीय है कि घुमंतू समुदाय में वे लोग शामिल हैं जिन्होंने या तो महाराणा प्रताप का साथ दिया और उनकी प्रतिज्ञा के अनुसरण में घर छोड़कर घुमंतू बने या फिर वे जो हथियार बनाने में निपुण थे या व्यापार के लिए कई नगरों में जाते थे और उन्हें रास्तों का ज्ञान था, इसके चलते 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में स्वातंत्र्य योद्धाओं का सहयोग किया। ऐसे लोगों से नाराज अंग्रेजों ने उन्हें दण्डित करने के लिए 'अपराधी' घोषित कर दिया। परिणामस्वरूप इनके पास न जमीन बची न घर बार बचे।

अत्यंत गरीबी की दशा में एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण को विवश इन समाज बंधुओं के लिए संघ प्रेरित उत्थान न्यास के कार्यकर्ता इनकी दशा सुधारने, इन्हें स्थायी रूप से बसाने आदि कार्य में लगे हुए हैं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार इन लोगों के पास पहचान पत्र तक का अभाव था। इसके लिए उत्थान न्यास ने पंचायती राज विभाग से मिलकर विशेष अभियान चलाया। पंचायती राज मंत्री श्री दिलावर ने कई जिलों में इस कार्य हेतु प्रवास कर बैठकें की।

राजस्थान सरकार के ग्रामीण विकास विभाग और राजस्व विभाग के स्तर पर इन्हें पट्टा देने संबंधी कार्य योजना पर गत तीन माह से कार्य हो रहा था। दो अक्टूबर को लगभग 21 हजार बेघर घुमंतू परिवारों को राजस्थान सरकार द्वारा आवासीय भूमि के पट्टे वितरित किए गए। स्थायी पक्का मकान बनाने के लिए तीन सौ वर्ग गज तक भूखंडों का नि:शुल्क अथवा नाम मात्र के शुल्क पर आवंटन किया गया। ■

कई लाभार्थियों के छलके आंसू

कई लाभार्थी मुख्यमंत्री द्वारा पट्टा वितरण के समय भावुक हो गए। उनकी आंखों में आंसू थे। उन्होंने कहा कि उनकी कई पीढ़ियां खाना बदोश के रूप में बीत गई। अब उन्हें स्थायी निवास के लिए पट्टा मिला है।

हिंद की चादर गुरू तेग बहादुर जी के बलिदान दिवस के संदर्भ में

चाँदनी चौक के बलिदानियों की अमर गाथा

▪ जसबीर सिंह

चौदहवीं व पंद्रहवीं शताब्दी में भारत बाहरी आक्रान्ताओं के अत्याचार व कट्टर धर्मान्धता से ग्रस्त था। बाबर के समय हो रहे अत्याचारों पर सिख परम्परा के पहले गुरु गुरुनानक देव जी ने अपनी वाणी में कहा

''खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतान डराइआ ।।
आपै दोसु न देई करता जमु कर मुगल चड़ाइआ ।।
एती मार पई करलाणे तैं की दरद न आइआ।।''

अर्थात् खुरासान से आये हुये मुगल आक्रान्ता ने हिन्दुस्तान की जनता को डरा रखा है व अत्याचार कर रखे हैं और हे ईश्वर, क्या आपको अत्याचार से पीड़ित लोगों के लिए दर्द अनुभव नहीं हो रहा है। बाहरी आक्रान्ताओं के अत्याचार निरन्तर जारी रहे तथा पाँचवें गुरु अर्जुन देव जी पर तत्कालीन शासक जहाँगीर के आदेश से जलती हुई रेत डाली गयी, जलती हुई लाल कढ़ाही में डाला गया, गरम जल से नहलाया गया और उनकी जीवन लीला समाप्त कर दी गयी । तब तथाकथित सुविख्यात जहाँगीरी न्याय का यह उदाहरण संसार के सामने आया।

औरंगजेब के अत्याचार एवं जबरन धर्मांतरण

औरंगजेब के शासन काल में वृहत्तर समाज पर अत्याचारों व जबरन धर्मांतरण की पराकाष्ठा होने लगी। उसने मथुरा, काशी, गुजरात, उड़ीसा, बंगाल, राजस्थान, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश आदि में मंदिरों को तुड़वाना व हिन्दुओं पर अतिरिक्त कर (जजिया) लगा दिया। उसने अपने अधिकारियों को हुक्म दिया कि उनके माथे से तिलक मिटा दिये जाए और उनके जनेऊ उतारकर जबरदस्ती मुस्लिम बना दिया जाए। ऐसी परिस्थितियों में 500 कश्मीरी पंडितों का जत्था गुरु तेग बहादुर जी के पास आनन्दपुर साहिब पंजाब पहुँचा व औरंगजेब के जुल्म से बचाने का आग्रह किया। तब गुरु जी ने उस दल से कहा कि जाओ और औरंगजेब के सिपहसलार इफतिखार खान से कहो कि पहले गुरु तेग बहादुर को इस्लाम कबूल करने के लिये मनाये फिर हम सब मुस्लिम बन जायेंगे। गुरू जी निर्दोष व मासूम लोगों को निष्ठुरता व जुल्म से बचाने के लिये अपने शिष्य भाई मतीदास, सतीदास और भाई दयाला जी के साथ आनन्दपुर साहिब छोड़ पटियाला, धमतान, जींद, रोहतक, आगरा के रास्ते दिल्ली के लिये रवाना हो गये।

क्रूरता की पराकाष्ठा

औरंगजेब दिल्ली से बाहर गया हुआ था। उसके वजीरों और काजियों ने गुरु जी को बादशाह के हुक्म अनुसार इस्लाम धर्म कबूल करने के लिये कहा। जब हर कोशिश के बावजूद गुरुजी नहीं माने तो उन्हें डराने व झुकाने के लिये भाई मतीदास जी को लकड़ी के घेरे में खड़ा कर एक बड़े आरे से चिरवाया गया। भाई दयाला जी को उबलते पानी की देग में डाल दिया गया। फिर सतीदास जी को रूई में लपेटकर आग लगा दी गयी ।

गुरुजी का बलिदान

बादशाह के आदेश से गुरु जी को तंग पिंजरे में कैद कर दिया गया व उनके सामने तीन शर्तें रखी गयी। पहली, कोई करामात-करिश्मा दिखाइये। दूसरी, इस्लाम कबूल कीजिये और तीसरी, मृत्यु के लिये तैयार हो जाइये। गुरू जी के इन शर्तो को मानने से इंकार करने पर शाही फरमान आया कि चांदनी चौक में लोगों के सामने इन्हें मार डाला जाये। 11 नवम्बर,1675 के दिन गुरु जी ने स्नान किया व जपुजी साहब का पाठ किया। बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ एकत्रित हो गयी। आसमान पर बादल और काली घटायें छायी हुई थीं, तेज हवायें चल रही थी, जल्लाद आया और तलवार से गुरू जी का सिर धड़ से अलग कर दिया गया।

गुरूजी के बलिदान होते ही हाहाकार मच गया ''यह तो जुल्म है। इतने बड़े संत का क्यों कत्ल कर दिया गया है? यह शासन अब ज्यादा चलने वाला नहीं।''

भाई जैता का साहस

प्रकृति ने ऐसा रूप धारण किया कि आंधी-तूफान के कारण मुगल सिपाहियों को कुछ दिखाई नही दे रहा था। चारों ओर भगदड़ मच गयी। इस भागदौड़ में गुरु जी का एक श्रद्धालु 'भाई जैता' आगे बढ़े, फुर्ती से गुरू जी का शीश उठाया, श्रद्धा से अपने कपड़ों में लपेट लिया और अपने दो साथियों 'भाई नानू' और 'भाई ऊद्धा' को साथ लिया तथा छिपते-छिपाते पाँच दिन की यात्रा पश्चात् कीरतपुर 'पंजाब' जा पहुँचे। जैता जी ने बोझिल मन से गुरु जी के शीश को उनके सुपुत्र गोविन्द राय जी के आगे रखा। गोविन्द राय जी ने भाई जैता जी के साहसिक कार्य को सराहते हुये कहा ''रंगरेटे गुरू के बेटे।'' भाई जैता जी एक पिछड़ी जाति 'रंगरेटा' के थे।

गुरु तेग बहादुर जी के शीश का बड़े सत्कार के साथ आनन्दपुर साहिब में संस्कार किया गया जहाँ पर वर्तमान में बहुत ही सुन्दर गुरुद्वारा शीशगंज सुशोभित है ।

लखीशाह बंजारा

उधर दिल्ली में गुरु जी के एक और श्रद्धालु शिष्य ''लखी शाह बंजारा'' व उसका बेटा ''नगाहिया'', रूई और दूसरे सामान की कई बैलगाड़ियाँ लेकर चांदनी चौक पहुँचे और भीड़ को चीरते हुये आगे आये, बड़ी फुर्ती से *...शेष पृष्ठ 12 पर*

बीड़ा

■ हरिशंकर गोयल 'श्री हरि'

''**प्रणाम** आऊ साहब''। रनिवास में प्रवेश कर जीजाबाई के पैर छूते हुए शिवाजी ने कहा ''आपने हमें याद किया बताया! बताइए, क्या आज्ञा है?'' शिवाजी ने सीधे जीजाबाई के नेत्रों में झांककर कहा।

''सुना है कि नृशंस, बर्बर, नर पिशाच अफजल खां ने आपको जिंदा या मुर्दा पकड़ने का बीड़ा बीजापुर दरबार में उठाया है! उसने बीजापुर सुल्तान अली आदिलशाह की वालिदा बड़ी बेगम को आश्वस्त किया है कि वह तुम्हें नेस्तनाबूद कर देगा। क्या तुम्हें इसकी जानकारी है शिवा? मुझे तुम्हारी बहुत चिंता हो रही है राजे।''

''आऊ साहब ! आप तो एक ऐसी मां हैं जो सबमें आशा का संचार कराती हैं। सबको हिम्मत दिलाती हैं। भय भी आपसे भयभीत रहता है। यदि आप ही इस तरह चिंतित रहेंगी तो मराठों को संबल कौन देगा?'' शिवाजी बोले ''शिवा को आपने अपने खून पसीने से सींचा है। उसे सही गलत का ज्ञान कराया है । शिवा ने आपसे शिक्षा ली है तो आप ही बताइए कि शिवा इतनी महत्वपूर्ण सूचना से बेखबर कैसे रह सकता है? मेरे जासूस न केवल बीजापुर दरबार अपितु मुगल सम्राट के दरबार में रहकर वहां की पल पल की सूचना देते रहते हैं। आप अपने शिवा को कब से कमजोर समझने लगीं हैं आऊ साहब?'' उलाहना देते हुए शिवाजी ने कहा ।

''मैंने सुना है कि वह एक भयानक राक्षस है। हिन्दुओं का तो वह जानी दुश्मन है। हिन्दुओं की बहन-बेटियां उठवा कर उन्हें 'गुलाम' बनाकर अपने हरम में कैद करके रखता है वह राक्षस! उसे निर्दोष लोगों की खाल उधेड़ने का बहुत शौक है और मैंने यह भी सुना है कि वह पहले नंबर का धूर्त,मक्कार, कपटी, षड्यंत्रकारी,

दगाबाज, बेईमान और विश्वासघाती है। उसी ने आपके पिता महाराज को धोखे से गिरफ्तार कर कैदखाने में डलवाया था। उसी ने आपके बड़े भ्राता सम्भाजी को धोखे से मार डाला था।''

''आऊ साहब, अफजल खां कोई बहादुर योद्धा नहीं अपितु एक भेड़िया है। और भेड़िया एक निहायत डरपोक जानवर होता है। आपने ही तो सिखाया है कि जो डर गया वो मर गया।''

''जालिम अफजल खां के विरुद्ध मैंने पूरी योजना बना ली है। माना कि अफजल खां की सेना हमारी सेना से बहुत बड़ी है। उसके पास 30 हजार सैनिक, 5 हजार घुड़सवार, 200 तोप और बहुत सारे हाथी हैं। हमारे पास तो केवल 5 हजार सैनिक ही है। लेकिन हमारे पास हौंसला है, मनोबल है- स्वराज्य का आदर्श है। माता-बहनों का आशीर्वाद है। मां तुलजा भवानी की कृपा है और विठोबा का वरद हस्त है। सबसे बड़ी बात यह है कि हमें आपका मार्गदर्शन भी प्राप्त है। हमारे पास ताना जी, मोरो जी, बाजीप्रभु देशपांडे , फुलोजी पंत , शिबे सिंह जाधव , जीवा महलां जैसे जांबाज हैं जो हारी बाजी जीतने की क्षमता रखते हैं और बहिर्जी नायक जैसे तेज तर्रार जासूस हैं जो दुश्मन की अंदर की खबरें लाकर बाजी पलट देते हैं। इसलिए आप दुष्ट अफजल खां के बीड़े के संबंध में बिल्कुल भी चिंता ना करें।'' शिवाजी राजे भौंसले ने जीजाबाई को पूर्ण आश्वस्त करते हुए कहा

''मैंने सह्याद्रि की ऊंची पहाड़ी पर प्रतापगढ़ में एक किला बनवाया है। मेरी योजना यही है कि अफजल खां को सह्याद्रि की पहाड़ियों में बुलवा कर उसका और उसके आतंक का खात्मा करूं। इसके लिए मैं अफजल खां से भयभीत होने का नाटक करूंगा, उससे आप विचलित मत होना। मेरे भयभीत दिखने से वह खुद को शूरवीर समझेगा और वह मेरे जाल में फंस जाएगा। इसी योजना के अनुसार उस धूर्त अफजल खां को प्रतापगढ़ लाकर उसे उसी तरह फाड़ूंगा जिस तरह भगवान नरसिंह ने दुष्ट हिरण्यकशिपु को अपने नाखूनों से फाड़ा था। उसे प्रतापगढ़ में ही दफनाने की योजना बन गई है।'' माता जीजाबाई के चरणों में अपना माथा टिकाकर आशीर्वाद लेकर शिवाजी तेजी से निकल गये ।

अफजल खां आतंक फैलाता हुआ निरंतर आगे बढ़ता रहा उसका सामना करने वाला कोई नहीं था। शिवाजी का कहीं कोई अता पता नहीं था। मराठे दुखी होकर ईश्वर से प्रार्थना करने लगे ''हे भगवान! हम जिन शिवाजी का भरोसा लेकर बैठे थे, वे शिवाजी तो पता नहीं कहां जाकर छुप गये हैं । अब आप ही हमारी रक्षा करना।'' जनता की करुण पुकार,क्रंदन अफजल खां के कानों तक भी पहुंच रहा था। अफजल खां का सबसे घाघ सिपहसालार कृष्णा जी पंत बोला-

''हुजूर! आपके खौफ से शिवाजी सह्याद्रि की पहाड़ियों में कहीं छुप गया है। वह पहाड़ी चूहा आपसे लड़ने नहीं आएगा। वह तो कायर है! उसने सिद्ध कर दिया है कि वह एक डरपोक किस्म का इंसान है।''

कृष्णा जी पंत की बातों में आकर

अफजल खां जोश में भरकर बोला ''बस एक बार वह पहाड़ी चूहा मुझे मिल जाए तो मैं उसे चींटी की तरह मसल दूंगा। तुम ऐसा करो पंत! मेरे दूत बनकर मेरा पैगाम दे दो उसे कि वह मेरे समक्ष आत्मसमर्पण कर दे अन्यथा मैं मराठों को जिंदा जला दूंगा।'' अफजल खां ने घमंड में भरकर कहा ।

कृष्णा जी पंत अफजल खां का दूत बनकर शिवनेरी आया लेकिन उसे शिवाजी नहीं मिले। तब उसे कहीं से पता चला कि शिवाजी प्रतापगढ़ के किले में छुपे हुए हैं तब वह प्रतापगढ़ चला गया। शिवाजी ने उससे वहां मुलाकात की। शिवाजी ने डरने का नाटक करते हुए कहा -''क्या संदेशा लाए हैं पंत काका? आप तो हमारे पिता महाराज के साथी रहे हैं इसलिए आप हमारे ही हैं। मैंने आपसे मिलने की हिम्मत इसी आधार पर कर ली अन्यथा डर के मारे मैं किसी से मिलता ही नहीं हूं।''

शिवाजी की बात से कृष्णा जी पंत बहुत खुश हुआ और घमंड में भरकर बोला ''अफजल खां बहुत ताकतवर है राजे, मिल बैठकर बात की जा सकती है।''

''क्या आप हमारी मुलाकात करा सकते हैं और यह वादा कर सकते हैं कि वह कोई छल कपट नहीं करेगा?''

''मैं अफजल खां की ओर से तुम्हें आश्वस्त करता हूं राजे। तुम्हें बस एक काम करना होगा। आप दोनों की मुलाकात यहीं प्रतापगढ़ में होगी। दोनों के पास कोई हथियार नहीं होगा और केवल एक अंगरक्षक रहेगा वह भी निहत्था। बोलो मंजूर है?''

''यद्यपि मैं बहुत भयभीत हूं लेकिन आपके आश्वासन से मैं संतुष्ट हूं। मुझे आपकी हर शर्त मंजूर है।'' आखिर मुलाकात का दिन 10 नवम्बर, 1659 आ गया। प्रतापगढ़ किले के नीचे तलहटी में पहले से आया अफजल खां शिवाजी का इंतजार करने लगा। बहुत देर के बाद जब शिवाजी नहीं आये तो कृष्णा जी पंत बोले

''मैंने तो पहले ही कहा था हुजूर कि वह बहुत डरपोक आदमी है। आपके सामने आने की हिम्मत नहीं है उसमें।'' उसकी बात पर अहंकार में चूर अफजल खां ने एक जोरदार ठहाका लगाया। इतने में उसके सेवक ने सूचना दी कि शिवाजी आ रहे हैं। शिवाजी अपने अंगरक्षक मोरोजी पंत के साथ आए थे। योजना के अनुसार अफजल खां ने अपनी दोनों बाहें फैलाकर कहा ''राजे, आ जाओ! हमसे गले मिलो जिससे हम दोनों के सारे गिले-शिकवे दूर हो जाऐं और हमारे कलेजे को ठंडक मिल जाये।''

शिवाजी उसकी आंखों में झांकते हुए एक-एक कदम संभल -संभल कर आगे बढ़ते रहे, फिर अफजल खां के गले लग गये। अफजल खां इतना लंबा था कि शिवाजी उसके गले तक ही पहुंच पाए थे। अफजल खां को अपना मंसूबा पूरा होता हुआ नजर आया। उसने पैंतरा बदलते हुए अपनी बांयी भुजा में शिवाजी की गर्दन दबोच ली और उसे जोर से भींच दिया। उसके पश्चात् उसने अपनी कमर से एक कटार निकाली और शिवाजी की पीठ में उसका एक भरपूर वार किया। लेकिन यह क्या ? वह कटार शिवाजी की पीठ में घुसने के बजाय फिसल गई थी।

शिवाजी को मौका मिल गया। उन्होंने अपनी गर्दन अफजल की जकड़ से छुड़ाते हुए अपने हाथ की उंगलियों में पहने बघनख को अफजल खां के पेट में घुसा दिया और उसकी अंतड़ियों को फाड़ दिया। उसके पश्चात् उन्होंने छुपाकर लाई कटार से अफजल खां के पेट में दो तीन भरपूर प्रहार किये। वह दर्द से कराह उठा। इतने में मोरो जी ने कृष्णा जी को दबोच लिया।

जगह जगह छिपे मराठा सैनिकों ने अफजल खां के नेतृत्व वाली बीजापुर की सेना पर आक्रमण कर दिया और उसे चारों ओर से घेर लिया।

मराठों के पराक्रम से बीजापुर रियासत की सेना पराजित होकर भाग गई। अफजल खां का वध कर दिया गया। अफजल खां के वध और बीजापुर रियासत की हार ने शिवाजी और मराठों की ताकत का अहसास मुगल शहंशाह औरंगजेब को करा दिया था।

- सेवानिवृत्त सदस्य, राजस्व मंडल, अजमेर एवं
आचार्य श्रीमद्भगवद्गीता, जयपुर

पृष्ठ 10 का शेष... गुरु जी के धड़ को उठाया, रूई के ढेर में छिपाया तथा गाड़ियों को हॉक कर अपनी बस्ती रायसीना ले गये। इस दृश्य को उस वक्त के एक गायक केसौ भट्ट ने इस तरह वर्णन किया है :-

चलो चलाई हो रही, गड़ गड़ बरसे मेघ,
लखी नगाहिया ले गये, तू खड़ा तमाशा देख

दूसरी तरफ मुगल सिपाही परेशान थे कि गुरु जी का शीश और धड़ कहाँ गायब हो गया? लखी शाह गुरु जी के धड़ को सत्कार से अपने घर ले गया और अंतिम संस्कार के लिये अरदास ''प्रार्थना'' के पश्चात् उसने अपने घर को ही आग लगा दी। मुगल फौज और लोगों ने यही समझा कि लखी शाह के घर को ही आग लग गयी है। इस तरह ईश्वर ने ''भाई जैता'' और ''भाई लखी शाह'' के साहसिक कार्य द्वारा गुरु जी के शरीर का अपमान होने से बचा लिया। जहाँ लखी शाह ने अपने घर को आग लगाकर गुरू जी के धड़ का अंतिम संस्कार किया था वहाँ अब गुरूद्वारा रकाबगंज सुशोभित है जो राष्ट्रपति भवन, संसद भवन और केन्द्रीय सचिवालय के समीप स्थित है ।

हिंद की चादर

जिस तरह चादर हमें सर्दी गर्मी से बचाती है व हमारी रक्षा करती है उसी तरह गुरू तेग बहादुर जी ने हिंदू धर्म, तिलक, जनेऊ व हिन्दुस्तान की रक्षा की, इसलिए उन्हें ''हिन्द की चादर'' कहा जाता है। गुरु जी के बलिदान ने मुगल साम्राज्य की नींव हिला दी जो उसके पतन का प्रमुख कारण बनी। 1783 में तीस हजार सिख सिपाहियों की फौज ने सरदार बघेल सिंह, सरदार जस्सा सिंह आहुलवालिया के नेतृत्व में मुगल फौज को हराकर दिल्ली के लाल किले पर केसरिया खालसा ध्वज फहराया।

-पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग व
राष्ट्रीय महामंत्री राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच

सरसंघचालक जी का राजस्थान प्रवास

विश्व में भारत की प्रतिष्ठा देश के सबल होने से है : डॉ. भागवत

विश्व में भारत की प्रतिष्ठा अपने देश के सबल होने से है। सबल राष्ट्र के प्रवासियों की सुरक्षा भी तभी है, जब उनका राष्ट्र सबल है। वरना निर्बल राष्ट्र के प्रवासियों को देश छोड़ने के आदेश दे दिये जाते हैं। भारत का बड़ा होना प्रत्येक नागरिक के लिए भी उतना ही आवश्यक है।

यह कहना है संघ के सरसंघचालक डॉ.मोहन भागवत का। वे बीती 5 अक्टूबर को बारां (चित्तौड़ प्रांत)में आयोजित स्वयंसेवकों के एकत्रीकरण के एक कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में लगभग 4 हजार स्वयंसेवक उपस्थित थे।

संघ व्यक्ति निर्माण की पद्धति है

उन्होंने कहा कि संघ कार्य यंत्रवत नहीं, बल्कि विचार आधारित है। संघ कार्य की तुलना योग्य कार्य विश्व में अन्य कोई नहीं है। उपमा के तौर पर सागर सागर जैसा है, गगन गगन जैसा है, वैसा ही संघ भी संघ जैसा ही है। संघ की किसी से तुलना नहीं हो सकती। संघ से संस्कार गटनायक में जाते हैं, गटनायक से स्वयंसेवक परिवार तक जाते हैं। परिवार से मिलकर समाज बनता है। संघ में व्यक्ति निर्माण की यही पद्धति है।

अभाव दूर करने का करें प्रयास

डॉ. भागवत ने कहा कि स्वयंसेवकों को बस्ती में सर्वत्र संपर्क कर समाज को संबल देकर बस्ती के अभावों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। समाज में सामाजिक समरसता, सामाजिक न्याय, आरोग्य, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन का आग्रह रहना चाहिए। स्वयंसेवक विभिन्न गतिविधि कार्यों में भी सक्रिय रहें। वे समाज की छोटी इकाई परिवार में समरसता-सद्भावना, पर्यावरण, कुटुम्ब प्रबोधन, स्वदेशी एवं नागरिक बोध को सहज बना सकते हैं। जीवन में छोटी-छोटी बातों को आचरण में लाने से समाज एवं राष्ट्र की उन्नति में बड़ा योगदान दिया जा सकता है।

भेद व विवाद मिटाकर संगठित होना होगा

हिंदू समाज को अपनी सुरक्षा के लिए भाषा, जाति, प्रांत के भेद व विवाद मिटाकर संगठित होना होगा। समाज ऐसा हो, जहां संगठन, सद्भावना एवं आत्मीयता का व्यवहार हो। समाज में आचरण का अनुशासन, राज्य के प्रति कर्तव्य एवं ध्येयनिष्ठ होने का गुण आवश्यक है। मैं व मेरा परिवार मात्र से समाज नहीं बनता, बल्कि हमें समाज की सर्वांगीण चिंता करनी है।

प्राचीन मंदिर के दर्शन

अपने चार दिवसीय प्रवास के दौरान सरसंघचालक जी ने बारां शहर के मांगरोल रोड स्थित प्राचीन प्यारेराम जी के मंदिर के दर्शन किए। बताया जाता है कि यह मंदिर तीन शताब्दी पूर्व का है। मंदिर दर्शन के पश्चात् उन्होंने स्वयंसेवकों के साथ मिलकर विभिन्न प्रजातियों के 51 पौधों का रोपण किया। स्वयंसेवकों ने उनकी सार-संभाल का संकल्प भी लिया।

समाज जोड़ने का सूत्र

स्वयंसेवकों के द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देते हुए सरसंघचालक जी ने कहा कि भारत पहले से ही एक हिंदू राष्ट्र है, उसको और अधिक उन्नत, सामर्थ्यवान तथा बलशाली बनाना है। शाखा से समाज को जोड़ने के सूत्र बताते हुए उन्होंने कहा कि अपरिचित से परिचय बढ़ाना, परिचित को मित्र बनाना, मित्र को स्वयंसेवक बनाना चाहिए। नित्य शाखा से ही समाज के लिए योग्य स्वयंसेवक निर्मित होंगे। ■

जैसलमेर

संघ भारत के नव उत्थान व पुनरोदय का एक महा अभियान है- होसबाले

संघ केवल एक संगठन मात्र नहीं है, अपितु भारत के नवोत्थान एवं सर्वप्रकार के पुनरोदय का महाभियान है। राष्ट्र जीवन का महत्वपूर्ण आंदोलन है।

1925 में नागपुर के छोटे से स्थान से शुरु हुआ संघ कार्य देश के सभी राज्यों, जिलों में पहुंच चुका है। इसको देश के प्रत्येक मंडल व बस्ती तक पहुंचाने का लक्ष्य है, जो दूर नहीं है। शुरुआत में आमजन संघ को उपहास स्वरुप लेते थे, लेकिन स्वयंसेवकों के त्याग और समर्पण से निर्मित यह संगठन विश्व के सबसे बड़े सामाजिक संगठन के रूप में पहचान बनाने में सफल रहा है।

यह बात संघ के सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले ने जैसलमेर में कही। शहीद पूनम सिंह स्टेडियम में आयोजित स्वयंसेवकों के एकत्रीकरण में उन्होंने बताया कि **सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश केटी थॉमस ने पिछले दिनों संघ को परिभाषित करते हुए कहा कि संघ ही भारत में लोकतंत्र की सुरक्षा और देश सुरक्षा की गारंटी है। सेना और पुलिस के समक्ष संघ देश का सुरक्षा कवच है।**

हिंदू राष्ट्र की अवधारणा : हिंदू राष्ट्र की अवधारणा पर कहा कि हिंदू केवल एक धर्म नहीं, अपितु जीवन पद्धति है। यही संगठित विचार लेकर स्वामी विवेकानंद ने धर्म का प्रचार किया। ऐसे महापुरुषों की प्रेरणा से संघ ने देश के आमजन में विश्वास जगाया कि हिंदू एक हो सकता है। हिन्दुत्व को लेकर शुरु में लोग कहते थे कि यह साम्प्रदायिक है, संकुचित भाव है। परंतु संघ ने समझाया कि हिंदू सम्प्रदाय नहीं, एक जीवन दर्शन है। मानवता के उद्धार के लिए देश के ऋषि-मुनियों, साधु-संतों ने कठोर तप कर अनुकरणीय कार्य किया।

प्रकृति संरक्षण : सरकार्यवाह जी ने कहा कि प्रकृति व जीव-जंतुओं का संरक्षण हिन्दुत्व में ही निहित है और यह सनातनी व्यवस्था है। यही वजह है कि

आज हिंदू जीवन दर्शन की कई बातों को विश्वभर में मान्यता मिल रही है। योग और आयुर्वेद के विचार को विदेशी भी अपनाने लगे हैं। संघ अपने कार्यकर्ताओं के परिश्रम से राष्ट्र जीवन के विविध क्षेत्रों में सेवा कार्य से लोगों का विश्वास जीत रहा है।

नगर एकत्रीकरण में अखिल भारतीय प्रचारक प्रमुख श्री अरुण कुमार, सीमा जागरण मंच के अखिल भारतीय संयोजक श्री मुरलीधर, सह संयोजक श्री नींब सिंह, क्षेत्र संघचालक डॉ. रमेश अग्रवाल, क्षेत्र प्रचारक श्री निंबाराम, प्रांत कार्यवाह श्री खीमाराम, प्रांत प्रचारक श्री विजयानंद सहित जैसलमेर नगर के स्वयंसेवक बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए।

नागपुर

राष्ट्र सेविका समिति का विजयादशमी उत्सव

भारत विरोधी शक्तियों द्वारा फैलाए वैचारिक भ्रम को दूर करना होगा

हम भारतवासी एक समाज के नाते हम कौन है, हमारा गंतव्य क्या है, जीवन के प्रति देखने का हमारा दृष्टिकोण क्या है, यह सब भूलकर अंधानुकरण में लगे हैं।

भारत विरोधी शक्तियों के द्वारा फैलाए गए वैचारिक भ्रम के कारण हिंदू समाज आज जाति, बिरादरी, मत, पंथ के बंधन में फंसकर अपने विराट स्वरुप को तोड़ने में लगा है। महिला बनाम पुरुष, सवर्ण बनाम दलित, उत्तर भारत बनाम दक्षिण भारत, ऐसे आधारहीन विभेदों से लड़ता हुआ अपने 'स्व'को लुप्त करने मे लगा है। इस वैचारिक युद्ध को लड़ने के लिए हमें यथार्थ के प्रकाश में सत्य को टटोलते हुए अपने इतिहास का अवलोकन और अध्ययन करते हुए विजय प्राप्त करनी है। यह बात राष्ट्र सेविका समिति की प्रमुख संचालिका वी. शांताकुमारी ने नागपुर में विजयादशमी समारोह के दौरान बीती 4 अक्टूबर को (रेशिम बाग) कही।

महिलाओं के प्रति दुर्व्यवहार और अमानवीय अपराधों की घटनाएँ बढ़ रही हैं। उसके लिए व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर काम करना होगा। कड़े कानून बने और कानून में परिवर्तन कर त्वरित निर्णय की प्रक्रिया के साथ ही समाज जागरण की आवश्यकता है। हमें आत्मसुरक्षा के लिए स्वयं ही सशक्त बनकर उसके तंत्र को सिखाने की व्यवस्था खड़ी करनी होगी। साथ ही युवकों को आत्मसंयमी बना कर महिलाओं के प्रति देखने का दृष्टिकोण देने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर शास्त्रीय नृत्यांगना पद्मविभूषित सोनल मान सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में कहा कि असाधारण शक्ति से संपन्न महिलाओं को अपने भीतर की शक्ति का अनुभव करना चाहिए और नए भारत के उत्थान के लिए आगे आना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान सेविकाओं द्वारा नियुद्ध, व्यायाम योग, रिबनयोग, यष्टि, योगासन, योगचाप तथा घोष का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया गया।

घुमंतू समुदाय के युवाओं को कराया मेवाड़ दर्शन

घुमंतू समुदाय के युवाओं को अपने देश की धरती, महापुरुष तथा संस्कृति से फिर से जोड़ने के लिए घुमंतू जाति उत्थान न्यास ने 'मेवाड़ दर्शन यात्रा' का कार्यक्रम गत 4 से 6 अक्टूबर को किया। राष्ट्र गौरव का भाव प्रबल करने वाली यात्रा में घुमंतू समाज के 100 युवाओं को महाराणा प्रताप से जुड़े हल्दीघाटी सहित कई ऐतिहासिक स्थलों, मंदिरों व किलों का भ्रमण कराया गया। यात्रा का शुभारंभ संघ के जयपुर प्रांत प्रचारक श्री बाबूलाल ने जयपुर के अम्बाबाड़ी में आयोजित एक समारोह में किया।

श्रद्धांजलि

नहीं रहे रतन टाटा

देश के सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री रतन टाटा का निधन समस्त भारतवासियों के लिए अत्यंत दु:खद है। उनके निधन से भारत ने एक अमूल्य रत्न को खोया है। भारत की विकास यात्रा में रतन टाटा का योगदान चिरस्मरणीय रहेगा। उद्योग के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में नई व प्रभावी पहल के साथ ही कई श्रेष्ठ मानकों को उन्होंने स्थापित किया। समाज के हितों के अनुकूल सभी प्रकार के कार्यों में उनका सतत सहयोग तथा सहभागिता बनी रही। राष्ट्र की एकात्मता व सुरक्षा की बात हो या विकास के कोई पहलू हो अथवा कार्यरत कर्मचारियों के हित का मामला हो रतन जी अपने विशिष्ट सोच व कार्य से प्रेरणादायी रहे। अनेक ऊँचाईयों को छू लेने के पश्चात् भी उनकी सहजता एवं विनम्रता की शैली अनुकरणीय रहेगी। हम उनकी पावन स्मृतियों को विनम्र अभिवादन करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। ईश्वर दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें यही प्रार्थना।

डॉ. मोहन भागवत,
सरसंघचालक
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

दत्तात्रेय होसबाले,
सरकार्यवाह
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

श्री रतन टाटा को पाथेय कण परिवार की ओर से सादर श्रद्धांजलि

पंचांग- कार्तिक (कृष्ण पक्ष) 18 अक्टूबर से 01 नवम्बर, 2024 तक

करवा चौथ व्रत-20 अक्टूबर, **रोहिणी व्रत (जैन)**-20 अक्टूबर, **अहोई अष्टमी**-24 अक्टूबर, **रमा एकादशी व्रत**-27 अक्टूबर, **गोवत्स द्वादशी (गोपाष्टमी)** - 28 अक्टूबर, **भौम प्रदोष**-29 अक्टूबर, **धनतेरस**-29 अक्टूबर, **नरक/रूप चतुर्दशी**-30 अक्टूबर, **छोटी दीपावली**-31 अक्टूबर, **दीपावली (महालक्ष्मी पूजन)**- 1 नवम्बर, **देव पितृकार्य अमावस्या**- 1 नवम्बर

ग्रह स्थिति : चन्द्रमा : 18-19 अक्टूबर को **मेष** राशि में, 20-21 अक्टूबर को उच्च की राशि **वृष** में, 22-23 अक्टूबर को **मिथुन** राशि में, 24 से 26 अक्टूबर को स्वराशि **कर्क** में, 27-28 अक्टूबर को **सिंह** राशि में, 29 से 31 अक्टूबर **कन्या** राशि में तथा 1 नवम्बर को **तुला** राशि में गोचर करेंगे। कार्तिक कृष्ण पक्ष में **गुरु** व **शनि** (दोनों वक्री) यथावत वृष व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी क्रमश: पूर्ववत मीन व कन्या राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** व **शुक्र** क्रमश: तुला व वृश्चिक राशि में स्थित रहेंगे। **मंगल** 20 अक्टूबर को दोपहर 2:23 बजे मिथुन से कर्क राशि में प्रवेश करेंगे। **बुध** 29 अक्टूबर को रात्रि 10:39 बजे तुला से वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे।

आगामी पक्ष के विशेष अवसर
(1 से 15 नवम्बर, 2024)
(कार्तिक कृष्ण 30 से शुक्ल 15 तक)

जन्म दिवस

7 नव.(1884)- डॉ.पांडुरंग सदाशिव खानखोजे
7 नव. (1888)- वैज्ञानिक चन्द्रशेखर वेंकटरमण
7 नवम्बर (1912)- माधवराव मुले
7 नवम्बर(1858)- विपिनचन्द्र पाल
कार्तिक शु.11 (10 नव.) संत नामदेव
10 नवम्बर (1920)- दत्तोपंत ठेंगड़ी
कार्तिक शु. 12(13 नव.)- महाकवि कालिदास
13 नवम्बर (1780)- महाराणा रणजीत सिंह
13 नवम्बर (1904)- भोगीलाल पाण्ड्या
14 नवम्बर (1891)- वैज्ञानिक बीरबल साहनी
15 नवम्बर (1875)- बिरसा मुण्डा जयंती (जनजातीय गौरव दिवस)
कार्तिक पूर्णिमा (15 नव.)-प्रथम गुरु नानक देव जी

बलिदान दिवस / पुण्यतिथि

2 नव. (1990)-अयोध्या में कारसेवकों का बलिदान
3 नव. (1947)- प्रथम परमवीर चक्र विजेता मेजर सोमनाथ शर्मा का बलिदान
7 नव. (1966)- दिल्ली में गोभक्तों का बलिदान
10 नव. (1675)- भाई मतिदास, सतीदास व दयाला का बलिदान
10 नव. (1908)- कन्हाईलाल दत्त का बलिदान
11 नव.(1675) -गुरु तेगबहादुरजी का बलिदान
12 नव.(1946)- मदनमोहन मालवीय की पुण्यतिथि

महत्वपूर्ण घटनाएं / अवसर

01 नव.(कार्तिक अमा.)-महावीर स्वामी निर्वाण दिवस
01 नव.(कार्तिक अमा.)- स्वामी दयानन्द निर्वाण दिवस
09 नव.(2019)- श्रीराम जन्मभूमि विवाद पर सुप्रीम कोर्ट का रामलला के पक्ष में ऐतिहासिक निर्णय
10 नव. (1659)- शिवाजी महाराज द्वारा अफजल खां का वध

सांस्कृतिक पर्व / त्योहार

1 नवम्बर - दीपावली
2 नवम्बर - अन्नकूट पर्व
3 नवम्बर - भैया दूज
9 नवम्बर - पुष्कर मेला (अजमेर)
10 नवम्बर - आंवला नवमी

उत्तर: जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं? - 1. पोर्ट ब्लेयर 2. केरल 3. चाणक्य 4. अशोक 5. कल्हण 6 फुटबाल 7. कोटा 8. तीरंदाजी 9. जैसलमेर 10. गोडावण

ऐतिहासिक नगर पाटलिपुत्र

पाटलिपुत्र या पाटलीपट्टन गंगा नदी के किनारे बसा विश्व के प्राचीन नगरों में से एक है। समय के साथ परिवर्तित होकर यह पाटलिग्राम, कुसुमपुर, अजीमाबाद, हुआ और अब पटना नाम से जाना जाता है जो वर्तमान बिहार की राजधानी है। बताया जाता है कि अजातशत्रु ने पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया था।

आजातशत्रु के उत्तराधिकारी उदयिन ने अपनी राजधानी राजगृह से पाटलिपुत्र स्थानांतरित की जो बाद में मौर्य और गुप्त काल में भी यथावत रही। सम्राट अशोक ने यहीं से अपना शासन किया। चंद्रगुप्त मौर्य और समुद्रगुप्त जैसे पराक्रमी शासकों की यह राजधानी रही है। चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में यहीं पर यूनानी इतिहासकार मेगस्थनीज आ कर रहा था। प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान और ह्वेनसांग ने यहाँ की यात्रा की और उस काल की रहन-सहन और शासन पद्धति पर विस्तार से लिखा।

कौटिल्य जैसे विद्वान ने यहाँ रहते हुए प्रसिद्ध ग्रंथ अर्थशास्त्र की रचना की। प्राचीन काल से ही यह नगर ज्ञान और विद्वत्ता के स्रोत के रूप में विख्यात रहा।

शेरशाह ने अपनी राजधानी बिहार शरीफ से पटना बनायी। यह दसवें गुरु श्री गोविन्द सिंह जी का जन्म स्थान है जिसे 'तख्त पटना साहिब' के नाम से भी जाना जाता है।

दिवस

राष्ट्रीय विधिक सेवा दिवस : सर्वोच्च न्यायालय द्वारा आम नागरिकों तक सर्व सुलभ न्याय व्यवस्था के उद्देश्य से 1995 में इस दिवस को मनाने की शुरुआत की गई।

बाल दिवस -14 नवम्बर

विश्व मधुमेह दिवस : विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा वर्ष 1991 में इस दिवस को मनाने की शुरुआत हुई। वैश्विक स्तर पर मधुमेह (डायबिटीज) के प्रति जागरुकता लाना इसका वास्तविक उद्देश्य है।

बीमारियों को खुला निमंत्रण है प्लास्टिक बोतल से पानी पीना

न्यूयॉर्क पोस्ट की एक रिपोर्ट के अनुसार माइक्रोप्लास्टिक पर हुए एक शोध में बताया गया है कि प्लास्टिक की बोतल में पानी पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। बोतलों का पानी रक्त प्रवाह में प्रवेश करने वाले छोटे प्लास्टिक कणों के कारण रक्तचाप बढ़ा सकता है। स्वास्थ्य समस्याओं में हृदय रोग, हार्मोन असंतुलन और कैंसर शामिल है। शोधकर्ताओं का कहना है कि अनजाने में निगलने पर भी प्लास्टिक के ये सूक्ष्म कण आंतों और फेंफड़ों में सेल्स बैरियर्स तोड़ सकते हैं।

घरेलू नुस्खा

- आलू के पतले स्लाइस काटकर उनको बर्फ के पानी में डाल दें। कुछ देर बार फिर उसे फ्राई करें। इससे चिप्स जल्दी और कुरकुरे बनेंगे।

कुकिंग / किचन टिप्स

- मक्खियों को भगाने के लिए एक स्प्रे बोतल में एक गिलास पानी भरकर उसमें 2 चम्मच सादा नमक डालकर उस स्थान पर छिड़कें जहां मक्खियां आती हैं।

आओ संस्कृत सीखें-46

- सब ठीक है। **सर्वे समीचीनम्।**
- ऐसा हो तो कैसा? **एवं चैत कथम्?**

गीता- दर्शन

यद्यद्विभूतिमत्सत्वं श्रीमदूर्जितमेव वा।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसम्भवम्।।

श्रीकृष्ण कहते हैं, हे अर्जुन! जो जो विभूतियुक्त अर्थात् ऐश्वर्ययुक्त, कान्तियुक्त और शक्तियुक्त वस्तु है, उसको तू मेरे तेज के अंशकी ही अभिव्यक्ति जान। (10/41)

गुप्त संख्या ज्ञात करो

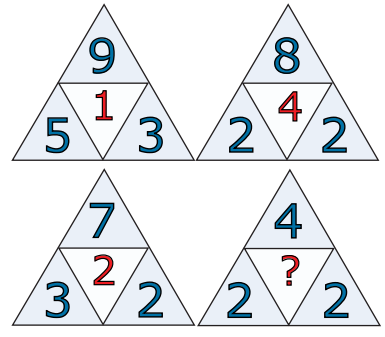

उत्तर : ०

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें- **सामान्य**- यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ** - यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम**- यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. वीर सावरकर अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट कहाँ स्थित है?
2. वायनाड वन्यजीव अभयारण्य किस राज्य में स्थित है?
3. चंद्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री का नाम बताइए?
4. सांची के स्तूप का निर्माण किसने कराया था?
5. 'प्रयाग प्रशस्ति' की रचना किसने की थी?
6. विश्व स्तर पर सबसे अधिक खेले जाने वाला खेल कौन सा है?
7. राजस्थान का सर्वाधिक साक्षरता वाला जिला कौन सा है?
8. राजस्थान के लिम्बाराम का संबंध किस खेल से है?
9. स्वतंत्रता सेनानी सागरमल गोपा राजस्थान के किस जिले के निवासी थे?
10. राजस्थान का राजकीय पक्षी कौन है?

उत्तर इसी अंक में...

कथा

ब्लैक स्पॉट

प्रोफेसर साहब ने अपनी क्लास में आते ही बोला, ''चलिए, सरप्राइज टेस्ट के लिए तैयार हो जाइये।''

प्रश्न पत्र बाँट दिए गए।

ये क्या सर, इसमें तो कोई प्रश्न ही नहीं है? वाइट पेपर पर एक ब्लैक स्पॉट!, एक छात्र खड़ा होकर बोला। प्रोफ्रेसर बोले, ''जो कुछ भी है आपके सामने है, आपको बस इसी को एक्सप्लेन करना है। इस के लिए आपके पास सिर्फ 10 मिनट हैं।

समय खत्म हुआ तो प्रोफेसर ने उत्तर पुस्तिकाएं एकत्र कीं और बारी-बारी से उन्हें पढ़ने लगे।

लगभग सभी ने ब्लैक स्पॉट को अपनी-अपनी तरह से समझाने की कोशिश की थी लेकिन किसी ने भी उस स्पॉट के चारों ओर खाली स्थान के बारे में बात नहीं की।

प्रोफेसर गंभीर होते हुए बोले, ''इस टेस्ट का आपके पाठ्यक्रम से कोई लेना-देना नहीं है। इस टेस्ट के पीछे मेरा एक ही उद्देश्य है। ''मैं आपको जीवन का सच बताना चाहता हूँ...''

इस पूरे पेपर का 99 प्रतिशत हिस्सा सफेद है, लेकिन आप में से किसी ने भी इसके बारे में नहीं लिखा और अपना 100 प्रतिशत उत्तर सिर्फ उस एक चीज की व्याख्या करने में लगा दिया जो मात्र 1 प्रतिशत है और यही बात हमारे जीवन में भी देखने को मिलती है ।

क्यों नहीं हम उन 99 प्रतिशत चीजों की तरफ ध्यान देते हैं, जो सचमुच हमारे जीवन को अच्छा बनाती हैं।

वर्ग पहेली

माँ दुर्गा के 9 नाम खोजिए

श्र	का	त	या	यि	नी	म
शै	ल	पु	त्री	कु	मु	हा
ल	रा	ल	दा	ष	णी	गौ
जा	त्री	स्त	द्वि	मां	रि	री
चं	डी	म	सि	डा	चा	रू
ता	मा	द	कं	स्क	न्द	प
चं	द्र	घं	टा	न	ब्र	ह्म

शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री

बाल प्रश्नोत्तरी - 65

जीतें पुरस्कार अब दूसरी और तीसरी बार भी

बाल मित्रों, 1 सितम्बर का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 7976582011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 को प्रमाण-पत्र तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। लगातार 5 बार उत्तर सही पाए जाने पर विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - **5 नवम्बर , 2024**

1. भारत में किस बोर्ड के पास पाकिस्तान से अधिक जमीन है?
(क) वक्फ बोर्ड (ख) शिक्षा बोर्ड (ग) मदरसा बोर्ड (घ) ओपन बोर्ड

2. हिंदू उत्पीड़न पर लिखे उपन्यास 'लज्जा' की लेखिका कौन हैं?
(क) मेहरुन्निशा परवेज (ख) बेगम अख्तर (ग) निदा फाजली (घ) तस्लीमा नसरीन

3. प्राचीन भारत के किस ग्रंथ में 'पुष्पक' विमान का उल्लेख मिलता है?
(क) शिवमहापुराण (ख) महाभारत (ग) रामचरितमानस (घ) विष्णुपुराण

4. शिवकर बापूजी तलपड़े ने सर्वप्रथम विमान किस स्थान पर उड़ाया था?
(क) मुम्बई (ख) गुजरात (ग) दिल्ली (घ) केरल

5. विष्णु अवतार भगवान दत्तात्रेय की माता का नाम बताइए?
(क) सावित्री (ख) अनुसूया (ग) मदालसा (घ) गार्गी

6. दिवेर युद्ध के समय महाराणा प्रताप के पास कुल कितने सैनिक थे?
(क) दस हजार (ख) पाँच हजार (ग) बारह सौ (घ) दो हजार

7. छत्तीसगढ़ के किस जिले के 16 गांवों में पहली बार तिरंगा फहराया गया ?
(क) बालोर (ख) सूरजपुर (ग) बलरामपुर (घ) बस्तर

8. हिमंत बिस्व सरमा किस प्रदेश के वर्तमान में मुख्यमंत्री हैं?
(क) असम (ख) नागालैण्ड (ग) मणिपुर (घ) मेघालय

9. भगवान विश्वकर्मा की जयंती प्रतिवर्ष कब मनाई जाती है?
(क) 17 सितम्बर (ख) 10 सितम्बर (ग) 20 सितम्बर (घ) 12 सितम्बर

10. संयुक्त राष्ट्र द्वारा विश्व पर्यटन दिवस मनाने की शुरुआत किस वर्ष में हुई?
(क) 1960 (ख) 1980 (ग) 1950 (घ) 1975

रास्ता खोजो

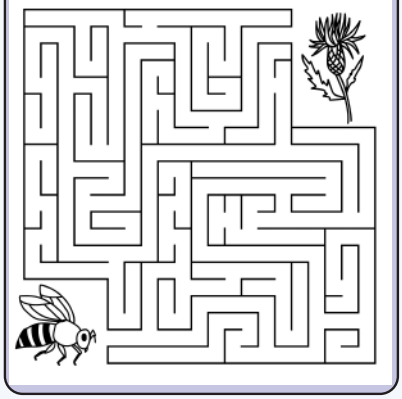

बाल प्रश्नोत्तरी-63 के परिणाम

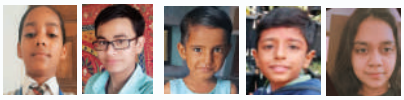

मुग्धा दिवाकर निशा परिक्षित लिजा

1. मुग्धा अग्रवाल, हनुमान तिराहा, धौलपुर
2. दिवाकर चौधरी,कनक वाटिका, सवाईमाधोपुर
3. निशा खिलेरी, पिपाड़ रोड, जोधपुर
4. परिक्षित मोदी,देशनोक, बीकानेर
5. लिजा अग्रवाल, वैशाली नगर, अजमेर
6. यशपाल सिंह, पीपली नाडी, जालोर
7. रविन्द्र सिंह राव, केलवा, राजसमन्द
8. नीतू जांगिड़, परबतसर, नागौर
9. नवयान्क सेन, हिल व्यू गार्डन, भिवाड़ी
10. अनन्या बुनकर, मालपुरा, टोंक

सही उत्तर
1. (क)
2. (क)
3. (ख)
4. (ख)
5. (घ)
6. (ग)
7. (ख)
8. (क)
9. (ग)
10.(घ)

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी - 65)

(अपनी पासपोर्ट फोटो अवश्य वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( )3.( )4.( ) 5.( )6. ( )7.( )8.( ) 9.( )10.( )

नाम.....कक्षा.....पिता का नाम.....

उम्र..... पूर्ण पता.....

.....पिन.....मोबाइल.....

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

आपणो अग्रणी राजस्थान
संकल्प पत्र के पूरे होते वादे

भजनलाल सरकार की युवाओं को अभूतपूर्व सौगात

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

श्री नरेंद्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

88 हज़ार से ज़्यादा सरकारी पदों पर होगी भर्ती

सफ़ाई कर्मचारियों की भर्ती

- नगर निकायों में सफाई कर्मचारियों की भर्ती प्रक्रिया की शुरुआत
- 23820 सफ़ाई कर्मचारियों की होगी भर्ती
- कोई न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता नहीं
- सार्वजनिक सफाई व्यवस्था में कार्य अनुभव के आधार पर किया जा सकेगा आवेदन
- लॉटरी के माध्यम से नगरीय निकायवार होगा सफाई कर्मचारियों का चयन

वाहन चालकों की भर्ती

- लगभग 5000 वाहन चालकों की भर्ती का मार्ग प्रशस्त
- दसवीं पास की न्यूनतम योग्यता एवं ड्राइविंग लाइसेंस धारक कर सकेंगे आवेदन
- लिखित परीक्षा के आधार पर होगी भर्ती

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की भर्ती

- 60000 चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की भर्ती की खुली राह
- लिखित परीक्षा के आधार पर होगी भर्ती
- दसवीं पास युवा कर सकेगा आवेदन

युवाओं को नौकरी, हर वर्ग का उत्थान
विकास के पथ पर अग्रसर राजस्थान

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

स्वराज्य संस्थापक

छत्रपति शिवाजी

20

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत

अफजल खां शिवाजी और स्वराज्य के लिए विकट चुनौती बन कर लगभग बाइस हजार सैनिकों के साथ हिंदू मंदिरों को अपवित्र, ध्वस्त करता एवं जन सामान्य पर अत्याचार करता राजगढ़ की ओर बढ़ा आ रहा था। उसने शिवाजी को पत्र भेजा...

शिवाजी का पत्र पहुँचता है...

शिवाजी ने राजगढ़ की जगह ऊंची चोटियों व घने जंगल के बीच खड़े प्रतापगढ़ दुर्ग के लिए मां से आशीर्वाद लिया।

प्रतापगढ़ दुर्ग आकर शिवाजी ने सारी गुप्त सैन्य तैयारियां कर ली।... दुर्ग के नीचे भेंट स्थल पर बेखौफ अफजल खां आ पहुंचा। शिवाजी ने साफे के नीचे लोहे की टोपी व अंगरखे के नीचे अभेद्य कवच पहना। बांह में कटार और मुट्ठी में बधनखा छिपाकर निकले।

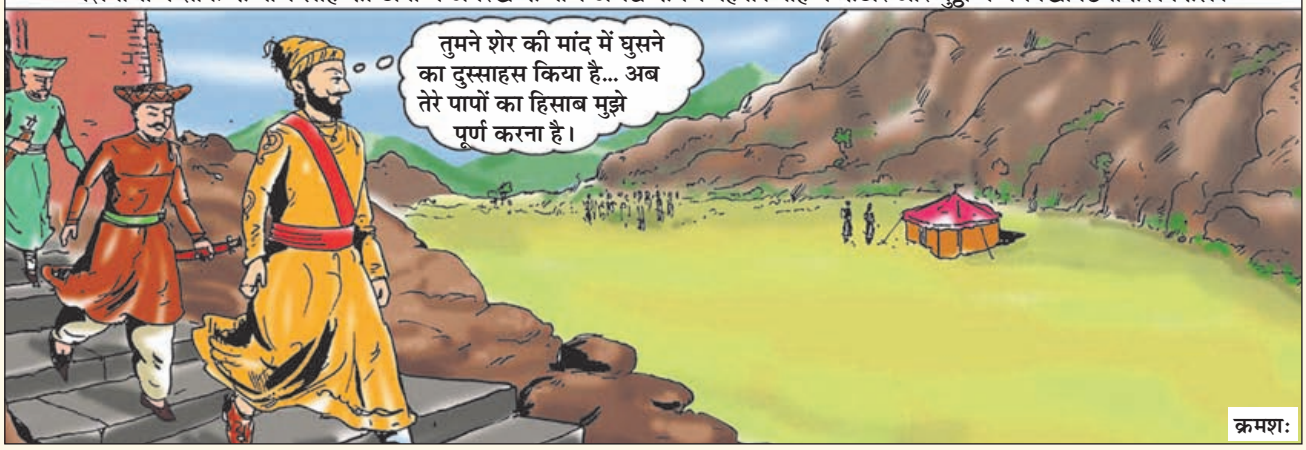

क्रमशः

पाक्षिक
पाथेय कण
(16-30 अक्टूबर, 2024)
(10 अक्टूबर को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY 202/2024-26

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/WPP 01/2024-26

RAS- 2021 में 750+ Selections

Springboard ACADEMY

AN INSTITUTE FOR IAS & RAS

Star achievers who realised their dreams of civil services with us

5 Ranks in TOP 10, 34 Ranks in TOP 50 & 69 Ranks in TOP 100 Students

Kiran Pal
RANK- 3
Class Student

Vishwajeet
RANK- 4
Class Student

Bharti Gupta
RANK- 5
Class Student

Aakansha Dubey
RANK- 6
Interview Program

Satya Narayan
RANK- 10
Interview Program

Shaheen Anjum
RANK- 12
Test Series

Deepshikha Kalvi
RANK- 13
Class Student

Karamveer Singh
RANK- 15
Class Student

Divya Soni
RANK- 16
Class Student

Gaurav Sarswat
RANK- 18
Test Series

Divya Bishnoi
RANK- 19
Interview Program

Sejal Shekhawat
RANK- 20
Class Student

Ankur Vijay
RANK- 21
Test Series

Ishwar Lal Gurjar
RANK- 22
Class Student

Pooja Pareek
RANK- 23
Interview Program

Narendra
RANK- 24
Class Student

Mohan Choudhary
RANK- 25
Class Student

Taniya
RANK- 26
Class Student

Paramjeet Singh
RANK- 27
Class Student

Rajat
RANK- 28
Interview Program

Neeraj Gupta
RANK- 31
Class Student

Kaushalya Bishnoi
RANK- 32
Test Series

Vikash Sharma
RANK- 34
Interview Program

Suhasi Jain
RANK- 36
Class Student

Pooja Choudhary
RANK- 37
Class Student

Ram Kumar Bhadu
RANK- 38
Test Series

Bhajan Lal Jangir
RANK- 39
Class Student

Bindia Bishnoi
RANK- 40
Class Student

Himanshu Panwar
RANK- 41
Class Student

Prateek Sharma
RANK- 42
Test Series

Shishpal Singh
RANK- 44
Class Student

Mukesh Kumar
RANK- 46
Interview Program

Arjun Rathore
RANK- 48
Interview Program

Navneet Kaur
RANK- 49
Interview Program

RAS

Foundation Batch

Online & Offline

8 अक्टूबर से नया बैच प्रारम्भ

Exclusive Live Batch from Classroom

Riddhi - Siddhi, Gopalpura Bypass, Jaipur

9636977490, 0141-3555948

ऐप डाउनलोड करने के लिए
QR Code स्कैन करें

GET IT ON Google Play

Connect with us- Springboard Academy Online Springboard Academy Jaipur

स्प्रिंगबोर्ड एकेडमी के IAS, RAS हेतु प्रमाणित क्लास नोट्स उपलब्ध The Notes Hub 7610010054, 7300134518

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी, ए-10, 22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन, 4 मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक- रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 अक्टूबर, 2024 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,